6

मौर्योत्तर काल

पिछले अध्याय में आपने मौर्य वंश के बारे में पढ़ा, जो आधुनिक अफगानिस्तान के कंधार क्षेत्र सहित भारतीय उपमहाद्वीप के बड़े हिस्से तक फैला हुआ था। 197 ई.पू. के लगभग मौर्य वंश का पतन हो गया। इस पाठ में हम मौर्य वंश के पतन से लेकर गुप्त वंश के उदय तक भारतीय उपमहाद्वीप में हुए राजनीतिक तथा सांस्क तिक चरणों का अध्ययन करेंगे अर्थात 200 ई.पू. से 300 ई. तक। इन पाँच सौ वर्षों में हम मात्र उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में विभिन्न शक्तियों का ही नहीं, बल्कि कला, स्थापत्य कला तथा धर्म के क्षेत्र में भी नई विशेषताओं का विकास देखेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आप जान सकेंगे:

- मौर्य वंश के पतन के पश्चात कौन–कौन से राजनीतिक वंशों का उदय हुआ;
- मध्य एशिया से आने तथा बसने वाले विदेशियों को जान सकेंगे;
- भारत और रोम के बीच व्यापार की प्रगति तथा इसके प्रभाव का मूल्यांकन कर सकेंगे;
- 200 ई. पू. से 300 ई. में कला तथा मूर्तिकला की विभिन्न शैलियों की महत्त्वपूर्ण विशेषताएं बता सकेंगे और
- दक्षिण भारत का प्रारंभिक इतिहास तथा संगम साहित्य के महत्त्व का विश्लेषण कर सकेंगे।

6.1 उत्तर भारत का राजनीतिक इतिहास

मौर्य वंश के पतन ने देश के विभिन्न भागों में क्षेत्रीय वंशों का उदय हुआ। उसी समय मध्य एशिया तथा पश्चिमी चीन से भी कई आक्रमणकारियों ने भारत पर आक्रमण किए। वे थे भारती–यूनानी, शक, पह्लव तथा कुषाण। इन्हीं राजनीतिक प्रक्रियाओं ने भारत को मध्य एशिया की राजनीति तथा सभ्यता के निकट जाने का अवसर दिया।

क) शुंग वंश

मौर्य वंश का आखिरी सम्राट ब हद्रत अपने सेनापति पुष्यमित्र शुंग के हाथों मारा गया, जिसने बाद में अपना साम्राज्य उत्तरी भारत में स्थापित किया। इसे शुंग वंश के रूप में जाना गया। एक तरफ जहाँ शुंग उत्तर भारत में शासन कर रहे थे, उसी समय भारतीय–यूनानी, जिन्हें यवन भी कहा जाता है, बल्ख में स्वतंत्र शक्ति के रूप में उभरे तथा जल्द ही उन्होंने भारत के उत्तर पश्चिमी तथा उत्तर क्षेत्रों में अपने साम्राज्य का विस्तार करना प्रारंभ कर दिया। इसका अध्ययन हम बाद में करेंगे। इस बात के भी संकेत मिलते हैं कि पुष्यमित्र शुंग का बल्ख के शासक डेमीट्रियस से संघर्ष भी हुआ, लेकिन उसका कोई राजनीतिक नुकसान नहीं हुआ।

बेसनगर (आधुनिक विदिशा) में एक स्तम्भ पर अंकित विवरण से किसी हेलीडोरियस, जो कि तक्षशिला (वर्तमान पाकिस्तान में रावलपिंडी के निकट) का निवासी था, के भागभद्र के राजदरबार के एक भारतीय यूनानी शासक अतिलकी दास के दूत के रूप में विवरण मिलता है। उल्लेख के अनुसार वह श्रीक ष्ण का भक्त था।

ई.पू. की प्रथम शताब्दी के द्वितीय चतुर्थांश में, अंतिम शुंग शासक की हत्या धोखे से उसके मंत्री वासुदेव ने की, जिसने कण्व वंश की नींव डाली। कण्व वंश के विषय में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है।

ख) बैक्ट्रीयन या भारतीय यूनानी

323 ई. पू. में सिकन्दर की म त्यु के पश्चात कई यूनानी भारत के उत्तरी पश्चिमी सीमान्त क्षेत्र बैक्ट्रीया (हिन्दुकुश पर्वत का उत्तर पश्चिम क्षेत्र, वर्तमान उत्तर अफगानिस्तान) को महत्त्वपूर्ण केंद्र बनाकर वहाँ निवास करने आ बसे। अपने यूनानी उच्चारण की वज़ह से बैक्ट्रीया के शासक बैक्ट्रीया–यूनानी कहलाए। ऊपर वर्णित भारतीय यूनानी शासक डेमीट्रियस का पुष्यमित्र के साथ संघर्ष हुआ।

सर्वाधिक सफल भारतीय–यूनानी शासक मेनेन्दर या जिसके साम्राज्य में सम्भवतः उत्तरी अफगानिस्तान तथा सिंधु नदी का पूर्वी क्षेत्र गंधार भी सम्मलित थे। प्रसिद्ध बौद्ध ग्रन्थ मिलिन्दपन्हो में उसका परिचय मिलिन्द के रूप में दिया गया है जिसमें मिलिन्द द्वारा ग्रन्थ के बौद्ध लेखक महाराज नागसेन से पूछे गए सवाल हैं। इससे हमें जानकारी मिलती है कि दिए गए उत्तरों से प्रभावित होकर राजा ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था। माना जाता है कि मेनेन्दर ने 155 ई.पू. से 130 ई.पू. तक शासन किया।

ग) शक वंश

शक, साइथियन वंश के लिए प्रयोग होने वाला हिन्दी नाम है, जो मूल रूप से मध्य एशिया के निवासी थे। अपने पड़ोसियों यू–चिस (कुषाणों से संबंधित आदिवासी समूह) से पराजित होकर वे ई.पू. प्रथम शताब्दी में भारत के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र तक्षशिला के आसपास निवास करने आए। सफल शक शासकों के राज्य में उनकी सीमाएं मथुरा तथा गुजरात तक व्यापक हो चली थीं।

शक शासकों में सबसे उल्लेखनीय शासक रुद्रदमन रहा, जिसने द्वितीय शताब्दी के मध्य शासन किया। उसका साम्राज्य लगभग समस्त पश्चिमी भारत तक विस्त त था। उसकी तमाम उपलब्धियों की जानकारी गिरनार अथवा जूनागढ़ में खुदे शिलालेख से

मिलती है। इस विवरण को प्राचीन भारत में पवित्र संस्क त में लिखा हुआ प्रथम शाही विवरण माना जाता है।

घ) पार्थियन

पार्थियन मूलतः ईरानी मूल के थे तथा शकों के साथ अपने मजबूत सांस्क तिक संबंधों की वजह से भारतीय मूल में उन्हें शक–पह्लव के रूप में जाना गया। पार्थियन शासन के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी पाकिस्तान के उत्तर पश्चिम क्षेत्र में पेशावर के निकट मरदान में प्रसिद्ध तख्त–ए–बही विवरण से मिलती है। 5वीं ईस्वी के आसपास के इस उल्लेख में पार्थियन शासक के रूप में गोंडोफ्रेंस या गोंडोफेयर्स का विवरण मिलता है। कुछ इतिहासकार इसे संत थॉमस के समकालीन मानते हैं। माना जाता है कि इन्होंने राजा तथा उसके भाई को ईसाई धर्म में धर्मान्तरण कराया था।

पाठगत प्रश्न 6.1

1. आखिरी मौर्य शासक कौन था?

2. हेलीडोरियस कौन था?

3. प्रसिद्ध बौद्ध ग्रन्थ मिलिन्दोपन्हों में किस भारतीय–यूनानी शासक का विवरण मिलिन्द के रूप में मिलता है?

4. कौन–सा खुदा हुआ संस्क त में लिखा गया विवरण प्राचीन भारत का प्रथम विवरण माना जाता है?

5. शक किस क्षेत्र के निवासी थे?

6.2 कुषाण वंश

कुषाण मूल रूप से पश्चिमी चीन के निवासी थे। उन्हें यू–चिस भी कहा जाता है। शकों तक पह्लवों को पराजित कर कुषाणों ने पाकिस्तान में बड़े साम्राज्य की स्थापना की। कुषाण वंश का प्रथम महत्त्वपूर्ण शासक कुंजुल कडफीसिस था। उसके बाद उसका पुत्र वेया कडफीसिस राजा बना। अगला शासक कनिष्क था। वह कुषाण वंश का सबसे महान शासक था। उसके शासन काल का आरंभ 78 ई. के लगभग माना जाता है। उसने एक नए युग की नींव डाली, जिसे शक संवत के रूप में जाना जाता है। कनिष्क के शासन काल में कुषाण साम्राज्य का क्षेत्रीय विस्तार अधिकतम क्षेत्रों में हुआ। उसका साम्राज्य मध्य एशिया से लेकर उत्तर प्रदेश के वाराणसी, कौशाम्बी और श्रावस्ती सहित उत्तर भारत तक विस्त त था। कुषाण के शासन का राजनीतिक महत्त्व इस तथ्य से सिद्ध

होता है कि उसने उत्तर भारत तथा मध्य एशिया को एक ही साम्राज्य का अविभाज्य अंग बनाया। परिणामस्वरूप विभिन्न अन्तर्क्षेत्रीय संस्क तियों का समन्वय हुआ तथा अन्तर्क्षेत्रीय व्यापार में व द्धि हुई।

इतिहास में कनिष्क को बौद्ध धर्म के महान संरक्षक के रूप में जाना जाता है। उसने कुंडलवन (वर्तमान में जम्मू–कश्मीर में श्रीनगर के निकट हरवान) में चतुर्थ बौद्ध समिति का आयोजन कराया, जिसमें बड़ी संख्या में बौद्ध भिक्षुओं ने भाग लिया था। उसी सम्मेलन में बौद्ध धर्म दो शाखाओं में विभक्त हो गया था हीनयान तथा महायान। कनिष्क ने स्थापत्य कला की दो शाखाओं–गांधार तथा मथुरा को भी संरक्षित किया, जिसके बारें में आप बाद में इसी पाठ में पढ़ेंगे। उसने पुरुषपुर नगर (वर्तमान पेशावर) में बौद्ध अवशेषों को संरक्षित करते हुए विशाल स्तूप का निर्माण कराया था। 15वीं शताब्दी के प्रारंभ में जब चीनी तीर्थयात्री फाह्यान ने यहां यात्रा की थी तो यह इमारत पूर्ण भव्यता के साथ मौजूद थी। कुषाण वंश का तीसरी शताब्दी के प्रारंभ में पतन हो गया।

कुषाण राजतंत्र तथा प्रशासन

कुषाणों की प्रशासनिक तंत्र के संबंध में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। संभवतः पूरा साम्राज्य छोटे–छोटे क्षेत्रों में विभाजित था तथा हर क्षेत्र एक महाक्षत्रप (सेनापति) द्वारा संचालित होता था। जिसका सहायक क्षत्रप होता था। किन्तु पूरे साम्राज्य में कितने क्षेत्र थे, यह ज्ञात नहीं है। सूत्र इंगित करते हैं कि कुषाण घुड़सवार घुड़सवारी करते समय पतलून का प्रयोग करते थे। मथुरा में पाई गई शीर्षविहीन मूर्ति से इस बात की जानकारी मिलती है। कुषाणों की सबसे महत्त्वपूर्ण विशिष्टता देवपुत्र शीर्षक का प्रयोग है, जिसका अर्थ है भगवान की संतान। यह कुषाण शासकों द्वारा दिव्यता के दावे की ओर संकेत करता है।

कुषाणों की उपलब्धियाँ

प्राचीन भारतीय इतिहास में कुषाण वंश जीवन के हर क्षेत्र में अपने विशेष योगदान की वजह से महत्त्वपूर्ण स्थान रखता हैं। उनके विशाल साम्राज्य की वजह से आंतरिक तथा बाहरी व्यापार में प्रगति हुईं इसके फलस्वरूप नए नगर केंद्रों का उदय हुआ। कुषाण काल की सम्पन्नता की झलक उनके द्वारा प्रयुक्त होने वाली सोने तथा तांबे की मुद्राओं से भी मिलती है।

साहित्य तथा चिकित्सा के क्षेत्र में भी भारत ने प्रगति की। आयुर्वेद का जनक माने जाने वाले चरक ने चिकित्सा आधारित पुस्तक 'चरक–संहिता' की रचना की, वहीं प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान अश्वघोष ने बुद्ध की विस्त त जीवन चरित्र की रचना की। दोनों ही विद्वान कनिष्क के समकालीन माने जाते हैं। कुषाणों ने मूर्तिकला की गंधार तथा मथुरा कला को संरक्षण प्रदान किया, जो कि बुद्ध तथा बोधिसत्वों की प्रारंभिक छवियों के स जन के लिए विख्यात है।

पाठगत प्रश्न 6.2

1. कुषाण वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक कौन था?

____

2. शक संवत किसके द्वारा तथा कब प्रारंभ हुआ?

____

3. किसके संरक्षण में चतुर्थ बौद्ध समिति का आयोजन किया गया?

4. चरक कौन थे?

6.3 मध्य एशिया के साथ संबंध

भारत पर बैक्ट्रीया यूनानी तथा शक पह्लव के आक्रमण कुषाणों के शासन काल में मध्य एशिया के राजनीतिक सम्पर्कों ने दो क्षेत्रों के मध्य उत्तरवर्ती सांस्क तिक समन्वय को जन्म दिया। धीरे–धीरे इन विदेशी समूहों ने अपनी पहचान खो दी तथा क्षत्रिय के रूप में अवतरित हो गए। कईयों ने बौद्ध धर्म धारण कर लिया। भारतीय–बैक्ट्रीया शासक मेनेन्दर का उल्लेख पहले हो चुका हैं, जिसने बौद्ध धर्म की दीक्षा नागसेन नामक भिक्षुक से ली थी।

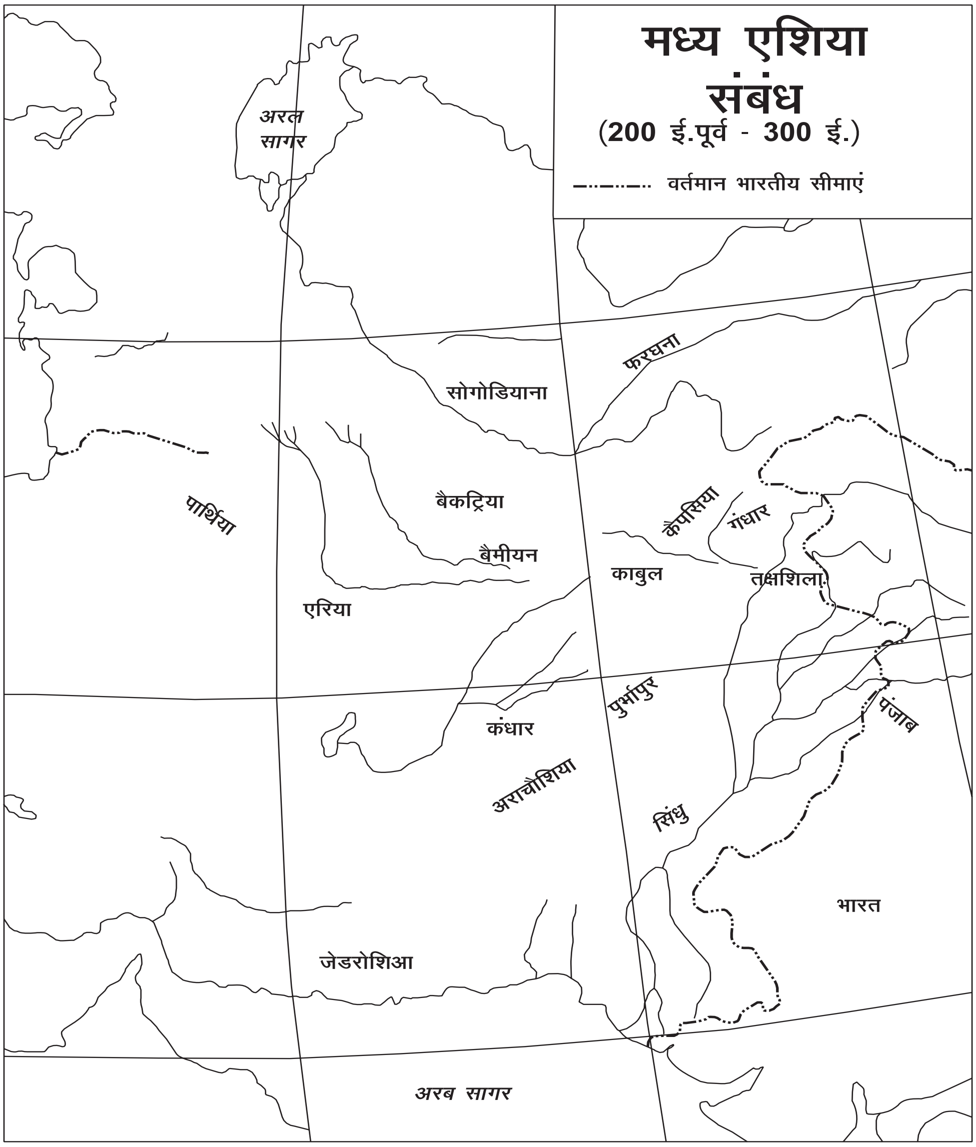

मानचित्र 6.1 मध्य एशिया संबंध

मध्य एशिया के साथ सम्पर्क ने भारत में मुद्रा निर्माण की नई विधियों को जन्म दिया। छिद्र वाले अपरिष्क त सिक्कों का स्थान धीरे–धीरे महान विभूतियों तथा पूर्व प्रचलित शासकों के चित्र वाले परिष्क त यूनानी शैली के सिक्कों ने ले लिया। यह नया प्रकार भारत में उत्तरवर्ती सिक्का प्रणाली के लिए प्रतिमान बन गया। इसके अतिरिक्त, मध्य एशिया से विशेषकर यूनानियों से खगोलशास्त्र का ज्ञान लिया। खगोल–विज्ञान के प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में यूनानी खगोल–वैज्ञानिकों का संदर्भ यवनाचार्यों के रूप में मिलता है। भविष्यफल ज्ञात करने की कला भी भारतीयों ने यूनानियों से सीखी। मध्य एशिया सम्पर्कों की वजह से मूर्तिकला के क्षेत्र में भी नए युग की शुरुआत हुई। गांधार शाखा, भारतीय तथा यूनानी शैली के समन्वय के फलस्वरूप उत्पन्न हुई।

पाठगत प्रश्न 6.3

1. यूनानी शैली के सिक्कों की क्या विशेषताएँ थीं?

2. आरंभिक भारतीय साहित्य में यूनानी खगोलविदों के लिए किस शब्द का प्रयोग किया गया है?

6.4 उड़ीसा तथा दक्कन में प्रारंभिक राज्य का उदय

हम जानते हैं कि दक्कन तथा पूर्वी भारत अशोक के साम्राज्य के हिस्से थे। उसने हिंसक युद्ध द्वारा कलिंग पर विजय प्राप्त की थी, जिसमें व्यापक जनहानि हुई थी। यह मौर्य शासन का ही प्रभाव है कि इसके पतन के पश्चात भारतीय इतिहास में प्रथम बार कलिंग तथा दक्कन का उदय हम देखते हैं।

कलिंग

अशोक के पश्चात कलिंग (वर्तमान उड़ीसा) चेदी वंश के शासन काल में महत्त्वपूर्ण हो गया था। दुर्भाग्यवश खारवेल के अतिरिक्त इस वंश के किसी शासक के विषय में सूचना उपलब्ध नहीं है। उसकी उपलब्धियाँ उड़ीसा में भुवनेश्वर के निकट उदयगिरि पहाड़ियों पर हाथीगुम्फा अभिलेख में संग हीत हैं। शिलाखंड के निकट हाथी की छवि अंकित होने के कारण अभिलेख का नाम हाथीगुम्फा पड़ा। इस विवरण से हमें ज्ञात होता है कि वह जैन धर्म का उपासक था तथा अपने पड़ोसियों के विरुद्ध कई युद्धों में उसने सफलता पाई थी। सम्भवतः उसकी कालावधि ई.पू. प्रथम शताब्दी थी।

पाठगत प्रश्न 6.4

1. खारवेल कौन था?

2. हाथीगुम्फा अभिलेख कहाँ है?

आपकी टिप्पणियाँ

6.5 सातवाहन वंश

ई. पू. प्रथम शताब्दी के मध्य सातवाहन वंश भारतीय राजनीतिक परिद श्य में प्रमुख रूप से उभरा। सातवाहन शासकों में महानतम शासक गौतमीपुत्र शतकर्णी (पहली शताब्दी) को माना जाता है। सबसे पश्चिम भारत के शक शासक नहपन को पराजित कर सातवाहन साम्राज्य के विस्तार का श्रेय उसे जाता है। उसका साम्राज्य दक्षिण में क ष्णा नदी से लेकर उत्तर में गोदावरी नदी तक फैला हुआ था। सातवाहन साम्राज्य की राजधानी महाराष्ट्र में औरंगाबाद के निकट प्रतिष्ठान (वर्तमान पैथन) थी। तीसरी शताब्दी के चतुर्थ भाग में सातवाहन वंश का पतन हो गया तथा इक्ष्वाकु वंश का शासन स्थापित हो गया।

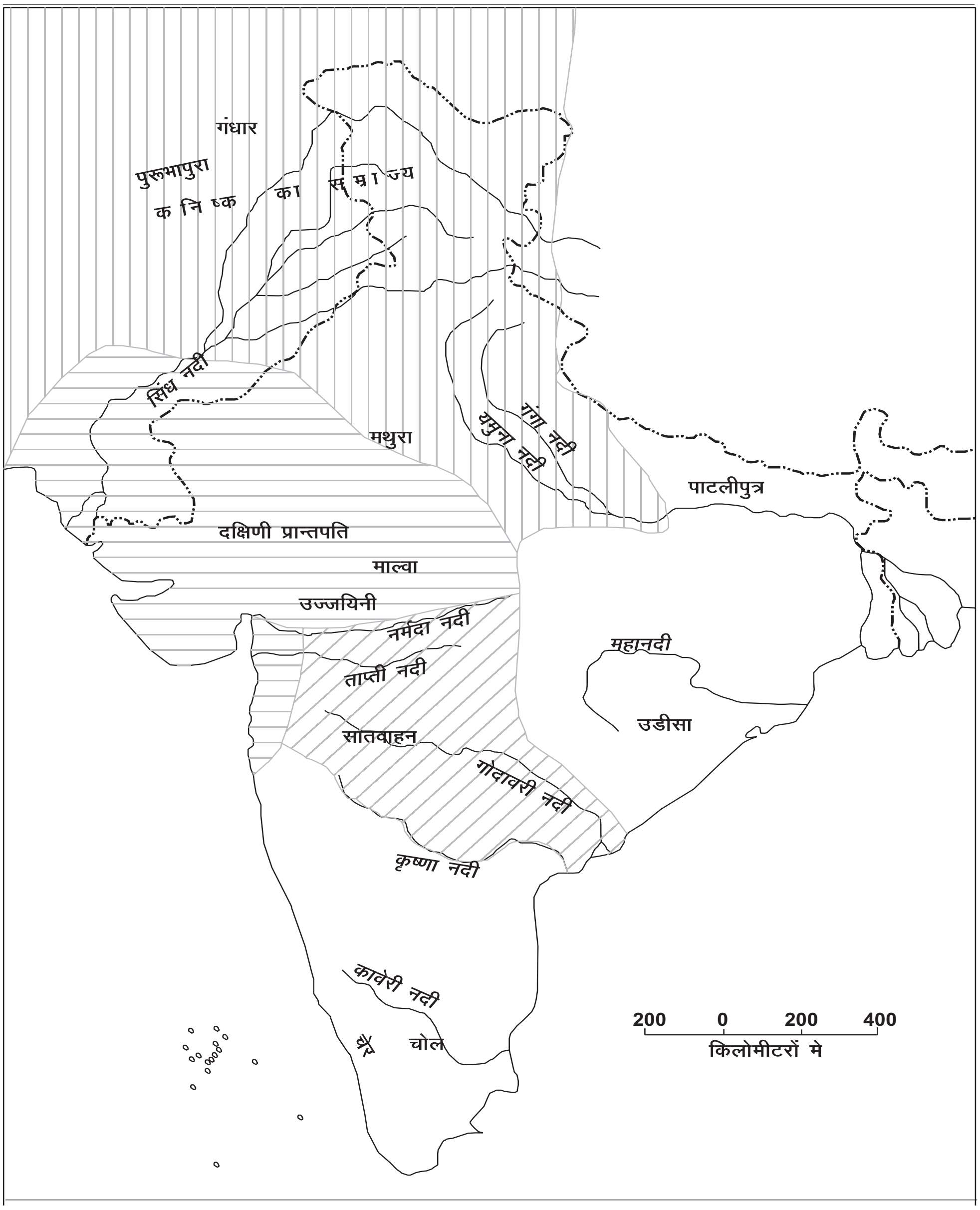

मानचित्र 6.2 सातवाहन तथा कुषाण साम्राज्य

सातवाहनः राजव्यवस्था तथा प्रशासन

सातवाहन साम्राज्य 'आहार' अथवा 'राष्ट्ररूपी' उप–प्रभागों अर्थात जिलों में विभाजित था। प्रशासन की लघुतम इकाई 'ग्राम' थी, जिसका अध्यक्ष 'ग्रामिक' हुआ करता था। राजा के सहायक तथा मंत्री के रूप में 'अमात्य' का भी विवरण मिलता है। नकद तथा वस्तुएँ दोनों ही प्रकार से राजस्व एकत्र किया जाता था। भारतीय इतिहास में प्रथम बार सातवाहन शासकों ने धर्म को स्वीकार करने के लिए बौद्धों तथा ब्राह्मणों को कर–मुक्त भू–दान की व्यवस्था की। बाद के काल में यह व्यवस्था और भी महत्त्वपूर्ण हो गई थी। सातवाहन शासक स्वयं को ब्राह्मण मानते थे तथा वर्ण व्यवस्था को बनाए रखना अपना प्रथम उद्देश्य समझते थे।

पाठगत प्रश्न 6.5

1. सातवाहन शासकों में सबसे महान शासक कौन माना जाता है?

   ____

2. सातवाहन वंश की राजधानी का नाम लिखे?

   ____

3. सातवाहन साम्राज्य में प्रशासन की सबसे छोटी इकाई क्या थी?

   ____

4. कर–मुक्त धार्मिक अनुदान की परम्परा भारत मे किस वंश के शासकों ने प्रारंभ की?

   ____

5. सातवाहन शासक स्वयं को किस वर्ण से संबंधित मानते थे?

   ____

6.6 व्यापारिक तथा व्यावसायिक गतिविधियाँ

क) आंतरिक तथा बाहरी मार्ग

मौर्योत्तर युग की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता आंतरिक तथा बाह्य व्यवसाय व्यापार के क्षेत्र में प्रगति रही। प्राचीन भारत के दो मुख्य आंतरिक मार्ग माने जाते हैं पहला उत्तरपथ जो कि भारत के उत्तरी तथा पूर्वी हिस्सों को उत्तरपश्चिमी सीमाओं से जोड़ता था अर्थात वर्तमान में पाकिस्तान तथा उससे आगे का क्षेत्र द्वितीय दक्षिणपथ जो भारतीय प्रायद्वीप को पश्चिमी तथा उत्तरी हिस्सों से जोड़ता था।

उत्तर तथा दक्षिण भारत को जोड़ने वाला प्रमुख मार्ग दक्षिणपथ था। यह इलाहाबाद के निकट कौशाम्बी से प्रारंभ होता था तथा आधुनिक उज्जैन, तत्कालीन उज्जैयनी से होता हुआ पश्चिमी तट के महत्त्वपूर्ण बंदरगाह भ गुकच्छ अथवा भड़ौच तक पहुंचता था। दक्षिणपथ आगे जाकर प्रतिष्ठान (वर्तमान पैठान) तक था जो कि सातवाहन साम्राज्य की राजधानी थी।

बाह्य व्यापार मार्ग की बात करें, तो हम पाएंगे कि 45 ई. में एक यूनानी समुद्री यात्री हिप्पेट्स द्वारा मानसून की खोज के पश्चात व्यापारिक उद्देश्यों के लिए ज्यादा से ज्यादा

समुद्री यात्राएँ प्रारंभ हो गईं भारत के पश्चिमी तट (उत्तर से दक्षिणो–मुखी) के प्रमुख बंदरगाह थे भारुकच्छ, सोपारा, कल्याण, मुजिरिस इत्यादि। इन बंदरगाहों से मालवाहक जहाज लाल सागर द्वारा रोम साम्राज्य में जाते थे।

दक्षिण–पूर्व एशिया के साथ व्यापार समुद्री मार्ग से होता था। भारत के पूर्वी तट पर स्थित प्रमुख बंदरगाह थे ताम्रलिप्ति (प. बंगाल), अरिकमेडु (तमिलनाडु समुद्री तट)। दक्षिण–पूर्वी एशिया के बंदरगाहों तथा भारुकच्छ के मध्य भी समुद्री मार्ग से व्यापार होता था।

ख) पश्चिम तथा मध्य एशिया के साथ व्यापार

मौर्योत्तर कालीन व्यावसायिक गतिविधियों की महत्त्वपूर्ण विशेषता भारत तथा पश्चिम के साथ होने वाला व्यापार या, जब रोमन साम्राज्य अपने चरम पर था। प्रारंभ में व्यापार भूमि के माध्यम से होता था, किन्तु इन मार्गों के रास्ते पर शासन करने वाले पारसियों द्वारा उत्पन्न अवरोधों के पश्चात समुद्री मार्ग पर स्थानांतरित हो गया। अब मालवाहक पोत भारतीय तटों से सीधे लाल सागर तथा फ़ारस की खाड़ी होते हुए जा सकते थे।

प्रथम ईस्वी में एक अज्ञात लेखक द्वारा लिखी गई पुस्तक 'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' में भारत–रोम व्यापार का सर्वश्रेष्ठ विवरण प्राप्त होता है। रोमवासियों द्वारा वांछित भारतीय उत्पाद थे मसाले, इत्र, रत्न, हाथी दांत तथा परिष्क त वस्त्र जैसे मलमल। भारत से रोम साम्राज्य को निर्यात होने वाले मसालों में काली–मिर्च भी शामिल थी, जिसे 'यवनप्रिया' के नाम से भी जानते हैं (संभवतः रोमवासियों के मध्य लोकप्रियता के आधार पर)। रोम साम्राज्य के साथ भारतीय मसालों का व्यापार मुख्यतः दक्षिण भारत से संचालित होता था। रोमवासी कई बहुमूल्य तथा आंशिक कम दुर्लभ रत्नों का भी आयात करते थे। यथा–हीरे, फ़िरोजा, नीलम, गोमेद इत्यादि तथा मोती, नील, चन्दन की लकड़ी तथा इस्पात आदि।

इन आयातों के बदले में रोमवासी भारत को स्वर्ण तथा चांदी का निर्यात करते थे। इस तथ्य का प्रमाण प्रथम सदी में महाद्वीप में प्रचलित रोमन सिक्कों से मिलता है। इससे रोम साम्राज्य का भारत के साथ सोने के अत्यधिक निर्यात का संकेत मिलता है। रोम द्वारा निर्यात होने वाली महत्त्वपूर्ण वस्तु थी 'वाइन' अंगूर की शराब, जिसका प्रमाण दक्षिण भारत में अरिकमेडु में व्यापक मात्रा में पाए गए अंगूर की शराब के पात्रों तथा रोमन लिपि की कतरनों से मिलता है। अन्य निर्यातित वस्तुओं में टिन, शीशा, मूंगा तथा दासी लड़कियाँ थीं।

ग) हस्तशिल्प तथा उद्योग

इस काल में हस्तशिल्प का उत्पादन असाधारण गति से हुआ क्योंकि आंतरिक तथा विदेशी दोनों ही प्रकार के व्यवसाय तथा व्यापार बहुत हद तक हस्तशिल्प गतिविधियों पर ही आधारित थे। मिलिन्दपन्हो नामक ग्रन्थ में 750 व्यवसायों का उल्लेख है, जिनमें से 60 हस्तशिल्प पर आधारित थे। कुशलता का स्तर बहुत ही ऊँचा था तथा सोने, चांदी बहुमूल्य रत्नों के कारीगर भिन्न–भिन्न थे। उज्जैन माला उत्पादन का प्रमुख केंद्र था। वस्त्र उद्योग अन्य प्रमुख उद्योग था। सूती तथा रेशमी वस्त्रों के प्रकारों के लिए मथुरा वंग (पूर्वी बंगाल) प्रसिद्ध थे।

दक्षिण भारत के कुछ स्थानों पर प्राप्त रंगों की टंकियों से यह संकेत मिलता है कि इस काल में उस क्षेत्र में रंगाई एक विकसित हस्तशिल्प उद्योग था। इस काल में शिल्पियों ने सम्पन्नता की नई ऊंचाइयों को छुआ तथा बहुत से प्राप्त अभिलेखों से यह भी संकेत मिलता है कि शिल्पियों ने धार्मिक मठों को भी अनुदान किया।

घ) कारीगरों के संघ-श्रेणी

व्यापारियों का समुदाय एक समूह के रूप में संगठित था, जिसे श्रेणी कहा जाता था तथा 'श्रेष्ठि' जिसका अध्यक्ष होता था। अन्य प्रकार का व्यावसायिक समूह 'सार्थ' कहलाता था, जो अर्न्तक्षेत्रीय व्यवसाय के घुमन्तु या कारवां प्रकार के व्यवसाय को परिभाषित करता था। इस संगठन का अध्यक्ष 'सार्थव' के नाम से जाना जाता था। इन व्यापारियों की भाँति सभी हस्तशिल्पी समूह भी संघ के रूप में संगठित थे तथा 'ज्येष्ठ' उनका प्रधान होता था। इसमें बुनकर, अनाज व्यवसायी, बांस के तेल उत्पादक, कुम्हार इत्यादि शामिल थे। मुख्य रूप से ये संघ उन व्यापारियों तथा शिल्पियों का संगठन था, जो या तो एक ही व्यवसाय में थे या एक ही प्रकार की वस्तुओं का व्यापार करते थे। वे अपने प्रमुख का चुनाव स्वयं करते थे तथा पारस्परिक सद्भाव के आधार पर अपने व्यवसाय को नियंत्रित करने के लिए मूल्य तथा गुणवत्ता से संबंधित नियमों का निर्माण करते थे। वे बैंक की तरह भी कार्य करते थे एक निश्चित ब्याज दर पर जनता से अमानती रकम प्राप्त करते थे।

पाठगत प्रश्न 6.6

1. उत्तरपथ से आप क्या समझते हैं?

   ____

2. दक्षिणपथ क्या था?

   ____

3. भारतीय इतिहास में मानसून की खोज का क्या प्रभाव पड़ा?

   ____

4. भारतीय–रोम व्यापार संबंधों को कौन–सी पुस्तक दर्शाती है?

   ____

5. 'श्रेणी' का क्या अर्थ है?

   ____

6.7 कला तथा स्थापत्य कला

मौर्योत्तर काल में कला मुख्यतः धार्मिक थी। कला तथा स्थापत्य कला के क्षेत्र में इस युग की दो मुख्य विशेषताएँ स्तूपों का निर्माण तथा मूर्तिकला की विभिन्नृशैलियों का विकास रहीं। बुद्ध की मूर्तियाँ इसी काल में प्रथम बार बनाई गईं। उत्तर–पश्चिम क्षेत्र के साथ संपर्कों की वजह से मूर्तिकला में नई शैली का विकास हुआ, जिसे गांधार कला कहा गया। बहुत हद तक यह यूनानी शैली से प्रभावित थी।

1. स्तूप

स्तूप एक विशाल अर्द्धव त्ताकार गुम्बद होता है, जिसमें एक केंद्रीय प्रकोष्ठ होता था, जहाँ एक छोटी संदूकची में बुद्ध अथवा बौद्ध भिक्षुओं के अवशेषों को रखा जाता था। उसका

आधार दक्षिणावर्त रास्ते से घिरा हुआ होता था, जिसमें लकड़ी की बाड़ होती थी, जो बाद में पत्थरों की हो गई थी। इस काल के प्रमुख स्तूप थे भरहुत सांची (दोनों मध्य प्रदेश में) जो कि अशोक द्वारा निर्मित थे। जिनका बाद में विस्तार किया गया तथा अमरावती और नागार्जुन कोंडा (दोनों आंध्र प्रदेश में)।

भरहुत स्तूप का निर्माण काल ई.पू. दूसरी शताब्दी माना जाता है। यह इसकी मूर्तिकला के लिए महत्त्वपूर्ण है। इसकी बाड़ लाल पत्थरों से बनी हुई है। इस काल में सांची में तीन

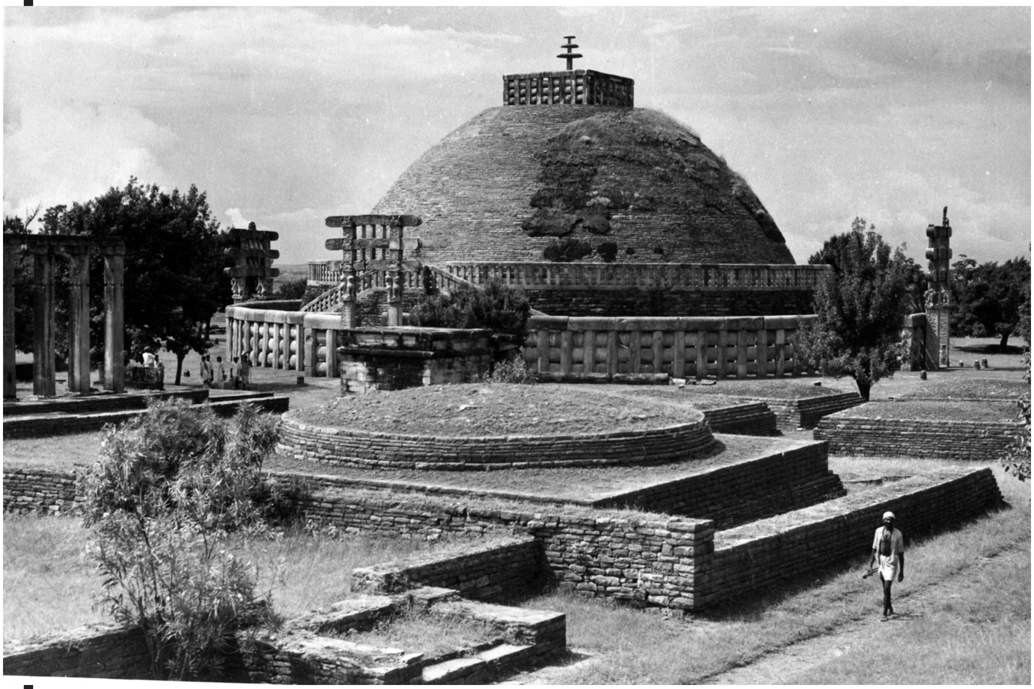

चित्र 6.1 सांची स्तूप

विशाल स्तूपों का निर्माण हुआ। इन तीनों में सबसे बड़ा सम्राट अशोक द्वारा बनवाया गया था, जिसका ई.पू. दूसरी शताब्दी में दो बार विस्तार हुआ। दक्षिण भारत में भी कई स्तूपों का निर्माण हुआ, किन्तु अपने पूर्ण रूप में कोई भी न बच सका। आंध्र प्रदेश में अमरावती स्थित अमरावती स्तूप अपने निर्णायक रूप में दूसरी शताब्दी में आया। स्तूप पर बसी मूर्तियां जातक तथा अन्य बौद्ध कहानियों पर आधरित हैं।

2. चट्टान स्थापत्यकला

स्तूपों के अतिरिक्त इस काल में चट्टान काटकर भवन निर्माण/स्थापत्य कला के क्षेत्र में भी प्रगति हुईं। सातवाहन शासकों के काल में महाराष्ट्र में पुणे तथा नासिक के निकट ठोस चट्टानों को काटकर बड़ी संख्या में मंदिरों, भवनों तथा भिक्षुओं के रहने के लिए निवास स्थलों का निर्माण करते थे। उस स्थान को चैत्य के नाम से जाना जाता था तथा भिक्षुओं के निवास स्थान को विहार कहा जाता था।

3. मूर्तिकला की शैलियाँ

ईसा के बाद की प्रथम शताब्दी में बौद्ध धर्म में दो विभाजन हुए, हीनयान तथा महायान। महायान बौद्धों ने बुद्ध को भगवान मानकर मानव रूप में पूजा करने पर बल दिया। परिणाम

स्वरूप बड़ी संख्या में विभिन्न क्षेत्रों में महात्मा बुद्ध की प्रतिमाओं का स जन हुआ। इस काल में मूर्ति निर्माण की तीन मुख्य शैलियां विकसित हुईं। वे थीं मथुरा शैली, गांधार शैली तथा अमरावती शैली।

(i) मथुरा शैली, समकालीन कला में मथुरा शैली का सबसे बड़ा योगदान महात्मा बुद्ध की वे मूर्तियां रहीं, जो कला के इस प्रकार में सम्भवतः पहली बार तराशी गईं। मथुरा शैली के कलाकार मूर्ति बनाने के लिए स्थानीय लाल पत्थरों का प्रयोग काले बिन्दुओं के साथ करते थे। मथुरा शैली में बड़ी संख्या में 'अयागपता' या पूजा के लिए पत्थरों के टुकड़ों के अतिरिक्त जैन तीर्थंकरों की मूर्तियां भी गढ़ी गईं। मथुरा शैली में ब्राह्मणों का प्रभाव भी देखा जा सकता है। कुषाण के शासन काल के दौरान व्यापक संख्या में हिन्दू देवी–देवताओं की मूर्तियों का निर्माण हुआ, जैसे कार्तिकेय, विष्णु तथा कुबेर।

4. कला की गांधार शैली

भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र में गांधार क्षेत्र स्थित था। इस क्षेत्र पर यूनानी, मौर्य, शुंग, शक तथा कुषाण वंशियों ने सदियों तक सफलतापूर्वक शासन किया। ईसाई युग के आरम्भ में इस क्षेत्र में जिस कला की शैली का विकास हुआ, उसे कई नामों से जाना गया, जैसे यूनानी–रोमन, भारतीय–यूनानी या यूनानी–बौद्ध। इसका कारण सम्भवतः इस

चित्र 6.2 गांधार कला बोधिसत्व

शैली पर रोम, यूनानी तथा भारतीय प्रभाव था। मुख्यतया मूर्तियों का विषय बौद्ध धर्म था, किन्तु शैली यूनानी थी। गांधार–कला के मुख्य संरक्षक शक तथा कुषाण थे।

इस शैली में बुद्ध तथा बोधिसत्व की मूर्ति निर्माण के लिए प्रयुक्त होने वाले पत्थर मुख्यतः भूरे–नीले रंग के होते थे। कला की गांधार शैली की मुख्य विशेषता मानव आक तियों के शरीर की विभिन्न मांसपेशियों सहित आकर्षक चित्रण में निवास करती है। महात्मा बुद्ध का चित्रण यूनानी शैली में कपड़ा ओढ़कर घुंघराले बालों के साथ किया गया है। महात्मा बुद्ध की ये प्रतिमाएं मूर्तिकला के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ मूर्तियों में आंकी जाती हैं।

5. कला की अमरावती शैली

क ष्णा तथा गोदावरी की निचली घाटी के मध्य आंध्र प्रदेश के क्षेत्र में कला की अमरावती शैली विकसित हुई इस कला को मुख्य संरक्षण सातवाहन वंश के शासकों द्वारा मिला, किन्तु यह उसके उत्तरवर्ती इक्ष्वाकु वंश के शासकों द्वारा संरक्षण मिलने के कारण बाद में भी फली–फूली। इस कला का उन्नत काल 150 ई.पू. से 300 ई. तक समझा जाता है। इस शैली की मुख्य कलाक तियां बांड़ों, खंभों तथा स्तूप के अन्य हिस्सों में पाई जाती हैं। इनकी विषय–वस्तु में महात्मा बुद्ध के जीवन से संबंधित कथाएँ सम्मिलित हैं।

अमरावती शैली की मुख्य विशिष्टता आख्यान कला है। गोलाकार आभूषण इस प्रकार उकेरे गए हैं कि वे स्वाभाविक तरीके से घटना का वर्णन करते हैं। जैसे एक आभूषण महात्मा बुद्ध द्वारा एक हाथी को पालतू बनाने की कथा की व्याख्या करता है। अमरावती शैली की दूसरी मुख्य विशेषता आक तियों को उभारने के लिए सफेद संगमरमर का प्रयोग था। इस शैली में प्रक ति की तुलना में मानव आक तियों का महत्त्व अधिक था।

पाठगत प्रश्न 6.7

1. मौर्योत्तर कालीन स्थापत्य कला की दो प्रमुख विशेषताएँ क्या थीं?

   ____

2. स्तूप से आप क्या समझते हैं?

   ____

3. मौर्योत्तर काल के प्रमुख स्तूप कौन–से थे?

   ____

4. चैत्य तथा विहार में क्या अंतर है?

   ____

5. मूर्तिकला की दो प्रमुख शैलियों के नाम बताएं जो मौर्योत्तर युग में विकसित हुई।

   ____

आपकी टिप्पणियाँ

6. मथुरा शैली में किस प्रकार के पत्थर प्रयुक्त किए जाते थे?

____

7. गांधार शैली के प्रमुख संरक्षक कौन थे?

____

6.8 दक्षिण भारत का प्रारंभिक इतिहास

क) दक्षिण भारत की महापाषाणिक संस्क ति

दक्षिण भारत में नवप्रस्तरकाल जिसमें पत्थरों को परिष्क त कुल्हाड़ी तथा धारदार हथियारों के प्रयोग की झलक मिलती है, के बाद महापाषाणिक संस्क ति अस्तित्व में आई (1200 ई.पू. से 300 ई.पू. तक) महापाषाणिक विशाल पत्थरों के साथ दफन तथा कब्रों को संग हीत करते गुम्बद स्थल हुआ करते थे। अधिकतर वे निवास स्थल से दूर ही स्थित होते थे। इन्हीं महापाषाणिक दफन स्थलो ने दक्षिण भारत से प्रथम लौह पदार्थ को उपलब्ध कराया। इनके अतिरिक्त काले तथा लाल मिट्टी के बर्तन महापाषाणिक सभ्यता की विशेषता थे। ये महापाषाणिक महाराष्ट्र में नागपुर के उत्तर से लेकर भारतीय प्रायद्वीप के दक्षिण बिन्दु तक बड़ी संख्या में पाए जाते थे। महापाषाणिक के महत्त्वपूर्ण स्थान रहे ब्रह्मगिरी, मस्की (कर्नाटक), आदिचल्लानुर (तमिलनाडु) तथा नागपुर (महाराष्ट्र) के निकट जूनापानी।

लोहे के औजार हर महापाषाणिक कब्र में पाए गए हैं। ये औजार उनकी शिल्प गतिविधियों की ओर संकेत करते हैं तथा इनमें मुख्य है—तीर का सिरा, कटार, तलवार, त्रिशूल, कुल्हाड़ी, हंसिया, कुदाली तथा हल इत्यादि। इन औजारों के साथ महापाषाणिक स्थानों में अनाज जैसे चावल, गेहूं की उपलब्धता यह संकेत करती है कि महापाषाणिक वंशज अपनी आजीविका के लिए क षि तथा शिकारी गतिविधियों पर निर्भर थे। दक्षिण भारत में महापाषाणिक सभ्यता के पश्चात संगमकाल का प्रारंभ हुआ।

ख) संगम काल

संगम काल से तात्पर्य दक्षिण भारत के आरम्भिक इतिहास का वह युग है, जब तमिल कवियों द्वारा बड़ी संख्या में तमिल कविताओं की रचना की गई। 'संगम' शब्द कवियों के समागम या एक साथ आने को बतलाता है। परम्परागत रूप से एक के पश्चात एक तीन संगम आयोजित किए गए। सभी तीनों संगम मदुरै के पांड्य शासकों के संरक्षण में विभिन्न स्थानों पर आयोजित किए गए। संगम साहित्य में रची कविताएं दो विषय—वस्तु पर आधारित थीं प्रेम तथा युद्ध। जिन्हें बाद में इत्तोतोगई नामक आठ संग्रहों में संग हीत किया गया। इस साहित्य का स जन काल ई.पू. 300 से 300 ई. तक माना जाता है। इस साहित्य की एक स्मरणीय विशेषता तत्कालीन तमिल समाज का विविधतापूर्ण वर्णन तथा उत्तर (आर्य) सभ्यता के साथ सामंजस्यपूर्ण रिश्तों का विवरण है।

तमिल क्षेत्र तिरुपति की पहाड़ियों से लेकर कन्याकुमारी के छोर तक विस्तत था। यह बड़ी संख्या में कबीलाई समूहों में विभक्त था तथा कबीले के सरदार की परम्परा वंशवादी थी।

संगम युग के दौरान तमिल क्षेत्र पर शासन करने वाले बड़े कबीलाई सरदार थे चोल, जिनकी राजधानी थी उरैयर, चेर जिनकी राजधानी थी। वनजी (करुर के निकट) तथा पांड्या जिनकी राजधानी थी मदुरै। चोल, चेर तथा पांड्यों के बीच बार–बार संघर्ष होते रहते थे। इसके फलस्वरूप संगम कवियों के युद्ध आधारित कविताओं के सजन की प्रेरणा मिली।

इस युग का तमिल क्षेत्र पाँच 'टिनाइयों' अर्थात आर्थिक क्षेत्रों में विभाजित था अर्थात विशेष आर्थिक स्रोतों पर आधारित क्षेत्र। वे थे–'कुरिनजी' (पहाड़ी क्षेत्र) 'पलाई' (निर्जल क्षेत्र): 'मुलई' (चरवाहे क्षेत्र):'मरुदम' (नम क्षेत्र) तथा 'नीतल' (समुद्री तट)। इन क्षेत्रों का सीमांकन स्पष्ट नहीं था तथा पूरे क्षेत्र में ये बिखरे थे। अपनी विभिन्न भौगोलिक संदर्भों तथा पर्यावरण विषयक विशेषताओं की वजह से विभिन्न 'टिनाइयों' के नागरिकों के अपने स्वयं के निर्वाह के लिए स्वयं के माध्यम थे। जैसे कुरिंजी में शिकार करना तथा कंदमूल चुनना था। पलाई में, जहाँ कुछ उत्पादन सम्भव नहीं था, यह आक्रमण तथा लूटपाट था। मुलाई में यह पशुओं की देखभाल के रूप में या, मरुदम में क षि तथा नीतल में यह मछली पकड़ना तथा नमक उत्पादन था।

हालाँकि वर्ण व्यवस्था का ज्ञान होने के बावजूद उत्तर भारतीयों की भाँति संगम काल में समाज के वर्ग को उच्च अथवा निम्न श्रेणी से नहीं पहचाने जाते थे। जैसे समाज में ब्राह्मणों का अस्तित्व था तथा सभी वैदिक कर्मकाण्ड तथा समारोह वे ही संचालित करते

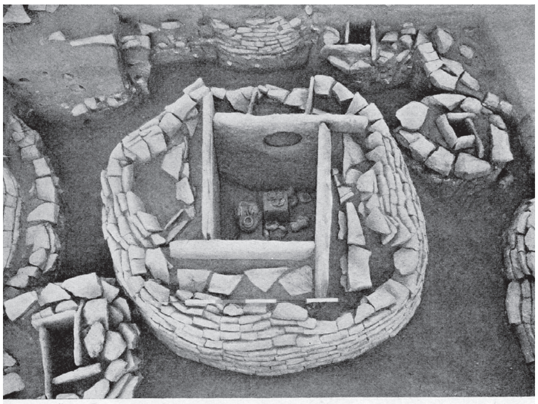

चित्र 6.3 महापाषाणिक कब्रें

थे सरदार के सलाहकार के रूप में भी कार्य करते थे, किन्तु उन्हें समाज में विशेषाधिकार प्राप्त नहीं था। व्यक्ति अपने व्यवसाय के अनुसार ही जाने जाते थे। जैसे कारीगर, शिल्पी, नमक विक्रेता, व्यवसायी, कपड़ा व्यवसायी। सम्पन्न वर्ग ईंटों से बने पक्के मकानों में निवास करता था तथा मूल्यवान वस्त्र धारण करता था, वहीं निर्धन वर्ग मिट्टी की झोंपड़ी में निवास करता था साधारण वस्त्र धारण करता था।

योद्धाओं को समाज में विशिष्ट स्थान प्राप्त था तथा युद्ध करते समय अपने प्राण अर्पित करने वाले योद्धाओं के सम्मान में पत्थर के स्मारक 'नटुकल' या 'विरुकल' स्थापित किए

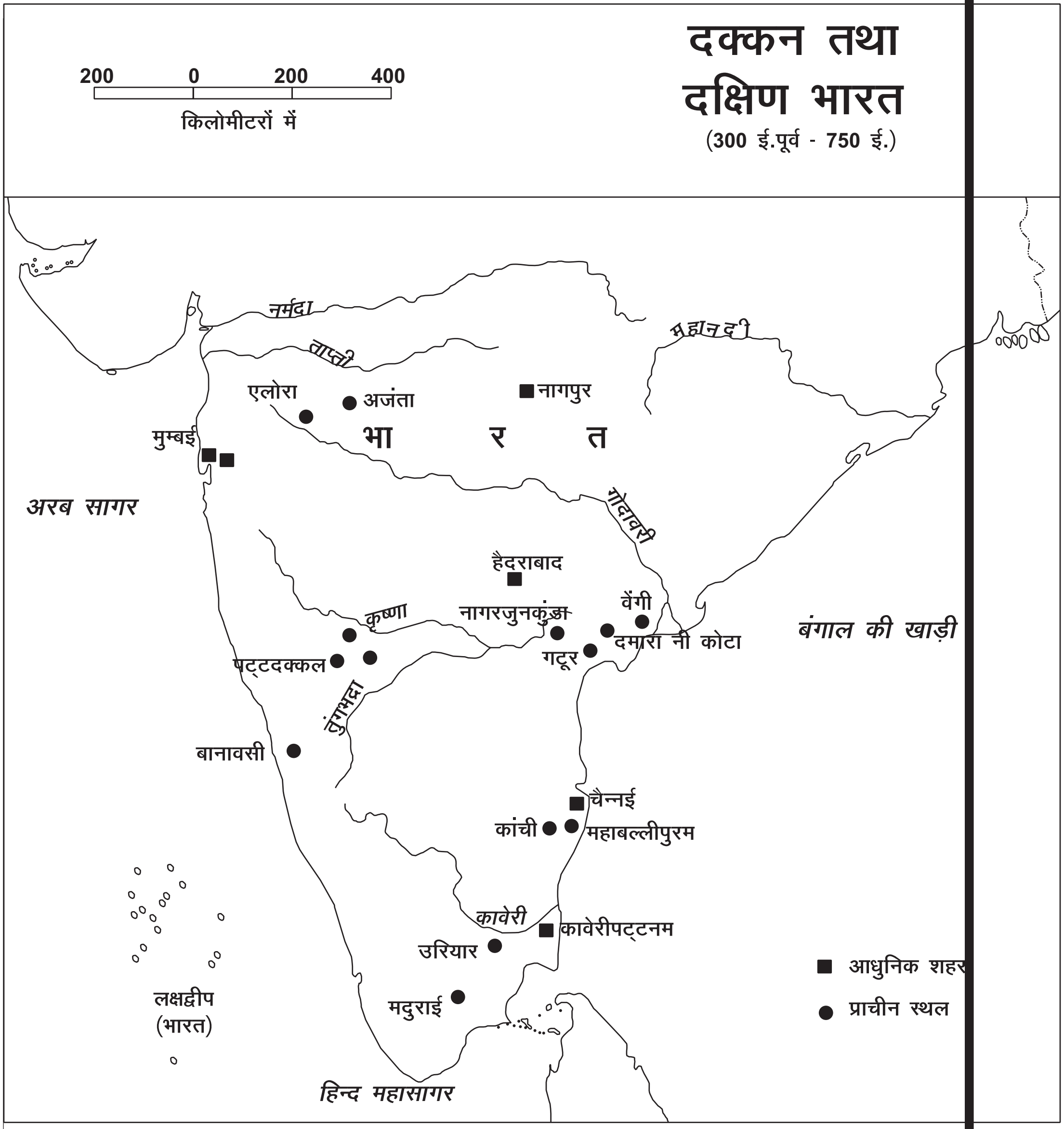

मानचित्र 6.3 तमिलनाडु तथा उत्तर संस्क ति

जाते थे उन्हें देव–प्रतिमाओं के समान पूजा जाता था। संगम युग की महिलाएं शिक्षित प्रतीत होती हैं। यह संगम साहित्य में कवियत्रियों द्वारा रचनाओं के योगदान से ज्ञात होता है। महिलाओं की क्रियाशीलता आर्थिक गतिविधियों में भी मिलती है यथा धानारोपण, पशुओं का पालन–पोषण, टोकरी निर्माण, धागा बनाना इत्यादि। हालाँकि सती प्रथा जैसी क्रूर परम्परा भी तमिल समाज में अस्तित्व में थी तथा इसे 'तिपायदल' कहते थे। किन्तु यह बाध्यकारी नहीं थी, क्योंकि समाज में कई विधवाओं के संदर्भ भी प्राप्त होते हैं। हालाँकि उनकी स्थिति शोचनीय थी, क्योंकि उनके साज–सिंगार पर तथा किसी भी प्रकार के आमोद–प्रमोद में भाग लेने पर प्रतिबंध था।

लोग क षि, शिल्प तथा व्यवसाय जैसी विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में व्यस्त थे। धान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पैदावर मानी जाती थी। यह लोगों के भोजन का अभिन्न अंग होने के साथ–साथ वस्तु विनिमय में भी काम आती थी। चूंकि तमिल क्षेत्र में निरन्तर बहने वाली नदी नहीं है अतः शासक वर्ग तालाब तथा बांधों का निर्माण करके क षि गतिविधियों को प्रोत्साहित करता था। चोल शासक कारिकल को कावेरी नदी पर बांध का निर्माण करने का श्रेय दिया जाता है। इसे देश में प्रथम बांध होने का भी गौरव प्राप्त है। शिल्प के क्षेत्र में सूती तथा रेशमी वस्त्रों की कताई सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण थी। नमक उत्पादन अन्य महत्त्वपूर्ण गतिविधि थी। संगम काल की सबसे विशिष्ट विशेषता रोम साम्राज्य के साथ व्यापारिक प्रगति थी। दक्षिण भारत से मिली रोम मुद्राओं से इस तथ्य की पुष्टि होती है। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि मानसूनों की खोज तथा भारतीय तटों पश्चिमी विश्व के मध्य प्रत्यक्ष समुद्री मार्ग इस व्यावसायिक प्रगति का मुख्य कारक रहा। इसने तमिल क्षेत्र में नए जिलों तथा शिल्प केंद्रों को जन्म दिया। वनजी जो तमिलनाडु में वर्तमान करूर के नाम से जाना जाता है, चेर वंश की राजधानी होने के साथ–साथ व्यापार तथा शिल्प का महत्त्वपूर्ण केंद्र था। 'मुजरिस' अर्थात दक्षिण पश्चिम तट पर क्रैंगेनोर चेर साम्राज्य का सर्वोत्तम बंदरगाह था। हमें बताया जाता है कि सोने से लदे रोम के पोत यहाँ आते थे तथा बड़ी मात्रा में काली मिर्च ले जाते थे। यह उत्क ष्ट वस्तुओं तथा हाथी दाँत का महत्त्वपूर्ण केंद्र था। तमिलनाडु के तिरुनेलवल्ली जिले में स्थित कोरकेई पांड्यों का एक प्रमुख बंदरगाह था। यह अपने मोतियों के लिए प्रसिद्ध था। चोल वंश की राजधानी उरैयुर (तमिलनाडु मे तिरुचनापल्ली) वैभवशाली भवनों वाली भव्य नगरी थी। चोलों का प्रमुख बंदरगाह केवरीपट्टनम अथवा पुहार था। संगम कवियों ने बाज़ार को सैनिकों द्वारा सुरक्षित बताया है।

धर्म के क्षेत्र में संगम काल में उत्तर भारतीय तथा दक्षिण भारतीय परम्पराओं के मध्य शांतिपूर्ण तथा निकट संबंध थे। धार्मिक कर्मकांड करवाने वाले ब्राह्मणों ने दक्षिण भारत में इन्द्र, विष्णु तथा शिव इत्यादि की अराधना को लोकप्रिय बनाया। जैन तथा बौद्ध भिक्षुओं के भी तमिल क्षेत्र में अस्तित्व के प्रमाण मिलते हैं। स्थानीय नागरिक, विशेषकर पहाड़ों पर निवास करने वाले, मुरुगन नामक देवता की आराधना करते थे, जिसे उत्तर भारत में युद्ध का देवता कार्तिकेय माना जाता है।

संक्षेप में, संगम साहित्य प्रेम तथा भावनाओं (अहम्) युद्ध तथा सामाजिक आचरण (पूरम) के माध्यम से ई.पू. 300 से 300 ई. तक तमिल क्षेत्र के राजनीतिक संघर्ष, सामाजिक विषमता तथा आर्थिक सम द्धि का पूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है।

पाठगत प्रश्न 6.8

1. महापाषाणिक से आाप क्या समझते हैं?
2. संगम शब्द से क्या तात्पर्य है?
3. संगम साहित्य की विषय–वस्तु क्या थी?
4. संगम साहित्य में वर्णित मुख्य कबीले तथा सरदार कौन थे?
5. संगम कविताओं में वर्णित पाँच टिनाई अथवा आर्थिक क्षेत्र कौन से थे?
6. किस चोल शासक ने कावेरी नदी पर बांध का निर्माण किया?

आपने क्या सीखा

मौर्योत्तर काल में शुंग उत्तर भारत में मौर्यों के उत्तराधिकारी बने। उनके पश्चात कुषाणों ने शक तथा पह्लवों को पराजित कर वाराणसी से लेकर मध्य–एशिया तक बड़े साम्राज्य की स्थापना की। कुषाण शासकों ने सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक कनिष्क था। वह बौद्ध धर्म का महान संरक्षक था। उसने चतुर्थ बौद्ध समिति का आयोजन कराया तथा कला की गांधार मथुरा शैली को राजकीय संरक्षण दिया। उसके विशाल साम्राज्य की वज़ह से आंतरिक तथा विदेशी व्यापार में प्रगति हुई।

दक्षिण में सातवाहन वंश का साम्राज्य क ष्णा नदी तथा गोदावरी नदी के मध्य स्थापित हुआ तथा इस वंश ने औरंगाबाद के निकट प्रतिष्ठान को अपनी राजधानी बनाया। रोम साम्राज्य के साथ होने वाले लाभकारी व्यापार की वजह से भारतीय उपमहाद्वीप में व्यापार तथा वाणिज्य में अभूतपूर्व प्रगति देखी गई। कला की अमरावती शैली आंध्र प्रदेश में उनके प्रश्रय में फूली–फली।

दक्षिण भारत में नवप्रस्तर काल के बाद 1200 ई. पू. से 300 ई. पू. के मध्य महापाषाणिक सभ्यता अस्तित्व में आई।

महापाषाणिक नागरिक अपने जीवन निर्वाह के लिए क षि आधारित गतिविधियों पर आश्रित थे। ई.पू. 300 से 300 ई. तक संगम साहित्य दक्षिण भारत के आरम्भिक इतिहास पर प्रकाश डालता है। इससे हमें दक्षिण भारत के तीन प्रमुख नायक चोल, चेर तथा पांड्या की गतिवधियों का ज्ञान होता है। यह तत्कालीन तमिल समाज की अर्थव्यवस्था तथा सभ्यता का विविधतापूर्ण चित्रण करता है।

आपकी टिप्पणियाँ

पाठांत प्रश्न

1. मौर्य वंश के बाद उत्तर भारत में प्रमुख राजनीतिक विकास पर प्रकाश डालिए।
2. कुषाण कौन थे? भारत में उनके योगदान की समीक्षा कीजिए?
3. ईसाई युग की आरम्भिक शताब्दी में भारत तथा मध्य एशिया के मध्य संबंधों की विस्तार से चर्चा कीजिए?
4. गौतमीपुत्र शतकर्णी की उपलब्धियों पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए?
5. भारत के समुद्री व्यापार की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए?
6. उत्तर मौर्योत्तर काल में प्रस्फुटित में मूर्तिकला की विभिन्न शैलियों का विस्तार से वर्णन करें?
7. ईस्वी सम्वत की आरम्भिक शताब्दियों के बारे में तमिल क्षेत्र की राजनीतिक सामाजिक व्यवस्था की जानकारी संगम साहित्य हमें किस प्रकार देता है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.1

1. ब हद्रत
2. शुंग शासक भागभद्र के दरबार में हेलीडोरस भारतीय यूनानी शासक अतिलकी दास का राजदूत था।
3. मेनेन्दर
4. जूनागढ़ का रुद्रदमन अथवा गिरनार शिलालेख
5. मध्य एशिया

6.2

1. कनिष्क
2. 78 ई. में, कनिष्क
3. कुंडलवन (वर्तमान में जम्मू/कश्मीर में श्रीनगर के निकट हरवान) कनिष्क के संरक्षण में
4. आयुर्वेद के जनक के रूप में, जिन्होंने चरकसंहिता नामक पुस्तक लिखी।

6.3

1. उनमें शासक के चित्रों का चित्रण होता था।
2. यवना

6.4

1. चेरी वंश का शासक खारवेल, जिसने कलिंग पर ई.पू. द्वितीय शताब्दी के लगभग शासन किया
2. भुवनेश्वर के निकट उड़ीसा

6.5

1. गौतमी पुत्र शतकर्णी (प्रथम शताब्दी उत्तरार्द्ध)
2. प्रतिष्ठान (महाराष्ट्र में औरंगाबाद के निकट पैठान)
3. ग्राम
4. सातवाहन
5. ब्राह्मण

6.6

1. उत्तरपथ एक भूमिपथ था, जो भारत के उत्तरी तथा पूर्वी हिस्सों को उत्तर–पश्चिमी सीमाओं से जोड़ता था (आधुनिक पाकिस्तान तथा उसके आगे)
2. दक्षिणपथ वह थलमार्ग था, जो भारतीय प्रायद्वीप को भारत के उत्तर तथा पश्चिमी हिस्सों के साथ जोड़ता था।
3. इससे भारत तथा रोम के मध्य समुद्री व्यापार को प्रोत्साहन मिला।
4. 'फैरीप्लस ऑफ द एरीथ्रियन सी' एक अज्ञात लेखक द्वारा प्रथम शताब्दी में लिखी गई।
5. कारीगरों व्यापारियों का संघ।

6.7

1. स्तूपों का निर्माण तथा कला की क्षेत्रीय शैलियों का विकास।
2. स्तूप बौद्धों का उपासना स्थल हुआ करते थे, क्योंकि इसमें बुद्ध अथवा बौद्ध भिक्षुओं के अवशेष संग हीत होते थे।
3. सांची, बरहुत अमरावती तथा नागार्जुनकोंडा स्तूप
4. बौद्ध स्थापत्य कला के अन्तर्गत चैत्य तथा विहार चट्टान काट कर बनाए गए भवन थे। चैत्य मंदिर की भाँति था विहार भिक्षुओं का निवास स्थान था।
5. कला की मथुरा, गांधार तथा अमरावती शैलियां।
6. काले बिन्दुओं के साथ लाल पत्थर
7. शक कुषाण

6.8

1. महापाषाणिक कब्र स्थल थे, जिसमें कब्रें हुआ करती थीं।

2. यह तमिल कवियों के सम्मेलन को इंगित करता है।
3. प्रेम तथा युद्ध
4. 'कुरनिजी' (पहाड़ी क्षेत्र), 'पलाई' (निर्जल क्षेत्र), 'मुलाई' (चरवाहे क्षेत्र) 'मरुदम' (नम क्षेत्र) तथा 'नीतल' (समुद्री तट)
5. संगमकालीन चोल शासक करिकल

पाठांत प्रश्नों के लिए संकेत

1. देखें अनुच्छेद 6.2
2. देखें अनुच्छेद 6.2.2
3. देखें अनुच्छेद 6.3
4. देखें अनुच्छेद 6.5
5. देखें अनुच्छेद 6.6.2
6. देखें अनुच्छेद 6.7.3
7. देखें अनुच्छेद 6.8.2